★ वन सम्पदा / वनस्पति / प्राकृतिक वनस्पति ★

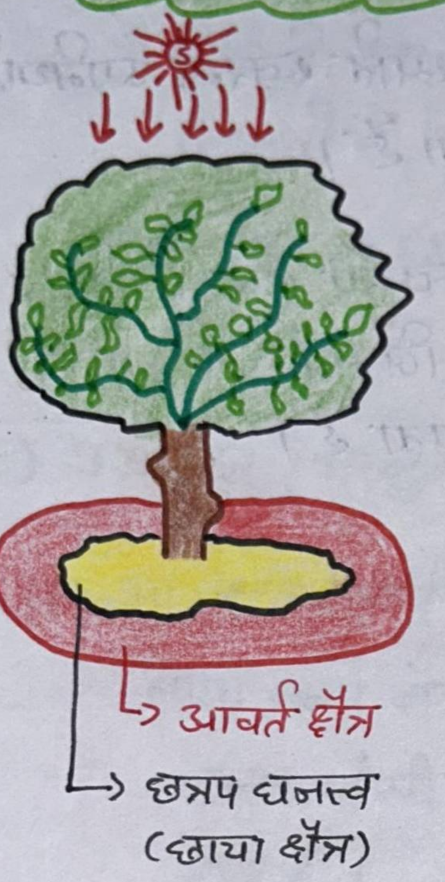

→ वनस्पति / पादप स्वरूप → (1) वृक्ष
(2) झाड़िया
(3) घास

★ जंगल
★ वन

→ वृक्ष, झाड़िया तथा घास को सम्मिलित रूप से वनस्पति / पादप स्वरूप के नाम से जाना जाता है।

→ ऐसा पादप स्वरूप / वनस्पति जो स्वतः उत्पादित व स्वतः नष्ट होती है प्राकृतिक वनस्पति कहलाती है।

(1) वृक्ष ⇒ ऐसा पादप स्वरूप जिसमें शाखाओं व पत्तियो द्वारा कुल आवर्त क्षेत्र के 10% से अधिक छत्रप घनत्व का निर्माण किया जाता है।

(2) झाड़ियाँ ⇒ ऐसा पादप स्वरूप जिसमें कुल आवर्त क्षेत्र के 10% से कम ~~छत्र~~ छत्रप घनत्व का निर्माण होता है झाड़ियाँ कहलाती है।

(3) घास ⇒ ऐसा पादप स्वरूप जिसमें छत्रप घनत्व का अभाव मिलता है घास की श्रेणी में आता है।

NOTE ⇒ वर्ष 2017 में बांस को घास की श्रेणी में शामिल किया गया है।

☆ जंगल ⇒ ऐसा क्षेत्र विशेष जिसमें वनस्पति स्वरूप अनियंत्रित/अव्यवस्थित रूप में फैला होता है।

☆ वन ⇒ ऐसा क्षेत्र विशेष जहाँ वनस्पति स्वरूप एक निश्चित रूप में विस्तारित होता है अर्थात् जिसका निर्धारण किया जा सकता है। वन कहलाता है।

☆ वनों का वर्गीकरण ⇒

(A) सघनता के आधार पर ⇒

(1) सघन वन / अति सघन वन ⇒

ऐसा वन्य क्षेत्र जहाँ वृक्ष एक दुसरे से सटे होते है तथा वृक्षों के तनों पर लताओं व झाड़ियों की प्रधानता मिलती है अति सघन / सघन वन कहलाते हैं।

- ये सदाबहार वन के उदा. मिलते हैं।

(2) मध्यम वन / सघन मध्यम वन ⇒

ऐसा वन्य क्षेत्र जहाँ वृक्षों के मध्य कुछ अन्तराल मिलता है तथा तथा तनों पर लताओ व झाड़ियों का अभाव मिलता है मध्यम / सघन मध्यम वन कहलाते हैं।

→ ये वन मानसुनी वन का उदा. हैं।

(3) खुले / बिखरे / छीतरें वन ⇒

ऐसा वन्य क्षेत्र जहां वृक्षों के मध्य अत्यधिक अन्तराल क्षेत्र मिलता है तथा कुछ स्थानों पर कटिली झाडियां मिलती है खुले वन कहलाते हैं।

→ ये वन मरुस्थलीय वन का उदा० माने जाते हैं।

(B) प्रशासन / कानुनी आधार पर वर्गीकरण ⇒

(1) आरक्षित वन / Reserved ⇒

ऐसा वन्य क्षेत्र जहाँ मानव प्रवेश, लकड़ी काटने व पशु चारण जैसी समस्त मानवीय क्रियाएँ पुर्णत: प्रतिबन्धित होती हैं।

- ये वन पर्यावरण की दृष्टि से सर्वाधिक उपयोगी मानें जाते हैं।

(2) संरक्षित वन / Protected ⇒

ऐसा वन्य क्षेत्र जहां मानव प्रवेश, लकड़ी काटने तथा पशु चारण जैसी समस्त मानवीय क्रियाओं की अनुमति नियमों के तहत दी जाती है।

(3) अवर्गीकृत वन ⇒

ऐसा वन क्षेत्र जहाँ मानव प्रवेश, लकड़ी काटने व पशु चारण जैसी मानवीय क्रियाएँ की पुर्ण स्वतंत्रता होती है अवर्गीकृत वन की श्रेणी में आते हैं।

(C) वर्षा की मात्रा के आधार पर वर्गीकरण (राज० में) ⇒ 5 type

क्र. स.	वन	वर्षा (cm)	प्रदेश	%
(1)	उष्ण कटि० कटिले मरुस्थलीय वन	0-30cm	प० मरुस्थलीय प्रदेश	6.26%
(2)	उष्ण कटि० धोक / धोकड़ा वन	30-60cm	अरावली पर्वतीय प्रदेश	58.11% (max)
(3)	उष्ण कटि० शुष्क व मानसुनी वन	60-80cm	पुर्वी मैदानी प्रदेश	28.38%
(4)	उष्ण कटि० सागवान वन	70-100cm	द० राजस्थान + द०प० राज० + द० पु० राज०	6.86%
(5)	उष्ण कटि० सदाबहार वन	150cm	मा० आबु (सिरोही)	0.39% (min)

★ राजस्थान में वनों के प्रकार ⇒ Mainly 3 type

[I] उष्ण कटिबंध कंटीले वन / Xerophytes ⇒ मरुद्भिद

→ 50 cm से कम वर्षा रेखा में मिलते हैं। (प० RJ)

(1) वृक्ष → खेजड़ी, रोहिडा, पीलु, बबुल

(2) झाडी - घास → सेवण, धामण, लाणा, फोग, झडबेरी, मुज, बेर, विशभ, थोर, पुरात, आंकड़ा, ग्वारभाटा।

[II] उष्ण कटिबंध मानसुनी वन / पतझड़ / पर्णपाती ⇒

100-200 cm (आर्द्र)	50-100 cm (शुष्क)
सागवान, सालर, शीशम, सेमल, चंदन, महुआ, कुसुम, आँवला, बांस, हुर्रा etc.	खेर, धोकड़ा, अमलतास, पलास, बील, खिरनी, गोदल, अर्जुन, रीठा, एक्सलवुड, तेंदु etc.

[III] उपोष्ण पर्वतीय वन ⇒

→ यह 1000 cm से अधिक की ऊंचाई पर मिलने वाली वनस्पति हैं।

→ इसे सदाबहार श्रेणी में भी रखा जाता हैं।

→ यह केवल आबु पर्वत खण्ड पर मिलता हैं।

→ इसके अन्तर्गत - आबु सिरेसिस, आम, बांस, नीम व सांगवान etc.

★ राजस्थान की प्रमुख वन उपज ★

(1) कत्था ⇒

- यह बेर के वृक्ष से प्राप्त होता है।
- कत्था तैयार करने वाली जनजाति → कथौडी जनजाति

उपयोग → (1) पान उद्योग
(2) औषधी

विस्तार → उदयपुर (डुंगरपुर, सिरोही, बांसवाड़ा)

(2) धौंक / धोकड़ा ⇒

उपनाम → राज॰ की वन निधि।
→ इसकी लकड़ी अत्यन्त कठोर व तैलीय आवरण की होती है।
उपयोग → बड़े पैमाने में ईंधन के रूप में।
विस्तार → अरावली पर्वतीय प्रदेश।
→ यह 240 - 760m की ऊंचाई पर मिलता है।
→ यह RJ में मिलनें वाली सर्वाधिक वनस्पति है।
धोकड़ा → जलाना → कोयला
→ जमवा - रामगढ़ अभ्यारण्य धोकड़ा वनों के लिए प्रसिद्ध है।

(3) सालर वृक्ष ⇒

→ ये वृक्ष 450 m ऊंचाई / अधिक ऊँचाई पर मिलतें हैं।

विस्तार → अरावली पर्वतीय
(राजसमंद , उदयपुर , अजमेर , जयपुर etc.)

उपयोग → (1) पैकिंग के कार्य में लकड़ी का उपयोग होता है।
(2) गोंद के प्रमुख स्त्रोत ।

Note ⇒ उत्तम श्रेणी का गोंद बाड़मेर जिलें में चौहटन क्षेत्र के अन्तर्गत कदम्ब के वृक्ष से बनाया जाता है।

(4) लाख ⇒

→ लेसीफर लक्खा नामक कीट के द्वारा लाख प्राप्त होता है।

उपयोग → आभुषण उद्योग

लाख उत्पादन / उद्योग → जयपुर जिला

(5) पान ⇒

→ इसके पत्ते का मुलत : उपयोग होता हैं।

उपयोग → पान उद्योग व औषधी के रूप में

सर्वाधिक उत्पादन → करौली जिला

पान की खेती को स्थानिय भाषा में → बरेड़ा

पान की खेती करने वाली प्रमुख जाति → तमोली जाति

(6) पलास / ढाक ⇒

उपनाम → वन की आग / अग्नि
जंगल की ज्वाला (orange color)
फाल्गुन की पाहुन

फुलों का रंग → केसरिया (लाल - पीला) → फाल्गुन माह में फुल
↳ फूलों द्वारा होली के रंग बनाए जाते हैं।

विस्तार → उदयपुर, सिरोही, अजमेर, जयपुर, भीलवाडा, चित्तौडगढ़, राजसमंद etc. (द० प० भाग)।
→ यह उदयपुर में फुलवारी की नाल व कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य में अधिक मिलता है।

क्षेत्र → (1) पर्वतों की घाटी क्षेत्र।
(2) पथरिले, ककड पत्थर वाला क्षेत्र।

(7) तेंदु पत्ता ⇒

स्थानीय नाम → टीमरू
उपयोग → बीडी उद्योग
सर्वाधिक उत्पादन → डुंगरपुर + बांसवाड़ा

Note ⇒ बीडी उद्योग – टोंक

(8) गोंद ⇒

अर्थ → वृक्ष से प्राप्त होने वाला चिपचिपा / लसलसा पदार्थ गोंद कहलाता है।

उपयोग → खाने व चिपकाने में।

सर्वाधिक उत्पादन → बाड़मेर जिला।

श्रेष्ठ कोटी का गोंद → "कुमठ की झाडी" से प्राप्त होता है तथा इसका सम्बन्ध "चौहटन तहसिल" बाड़मेर से है।

(9) सागवान / शुष्क सागवान ⇒

→ इसे स्थानिय भाषा में "टीक" कहा जाता है।

→ यह एक ईमारती लकड़ी है।

→ फर्नीचर उद्योग में सर्वाधिक प्रयुक्त होता है।

राजस्थान में सर्वाधिक ⇒

(1) बांसवाड़ा, डुंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़, चित्तौडगढ़ etc.

(2) सर्वाधिक सीतामाता अभ्यारण्य क्षेत्र

(10) महुआ का वृक्ष ⇒

उपनाम → "आदिवासियों का कल्पवृक्ष"

विस्तार → उदयपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, राजसमंद etc.

सीतामाता अभ्यारण्य में प्रधानता

वृक्ष → सर्वाधिक उड़न गिलहरी ← प्रतापगढ़ का शुभंकर

फुल → आदिवासी बीजो का उपयोग शराब बनाने के कार्य में करते हैं।

फल → बीज द्वारा "तेल" प्राप्त किया जाता है।

(11) बांस ⇒

उपनाम → हरा सोना व "आदिवासियों का सोना"

सर्वाधिक → बांसवाड़ा, डुंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, प्रतापगढ़ etc.

"विश्व की सबसे लम्बी / ऊँची घास"

(12) रोहिडा ⇒ "टेकोमेला अण्डुलेटा"

उपनाम → मारवाड का सागवान / मारवाड का टीक
मरुशोभा

फुल → केसरिया रंग
→ RJ का राजकीय पुष्प [31 Oct 1983]

विस्तार → जोधपुर, पाली, जालौर, बाडमेर etc.

→ इसमें बंसत ऋतु में पुष्प आते हैं।

(13) आंवल / खावुई ⇒

→ इससे चमड़े की सफाई का कार्य
विस्तार → पाली + जोधपुर

(14) सोनामुखी ⇒

→ इसकी पत्तियों का उपयोग होता है।
→ औषधीय पौधा है।
विस्तार → पाली + जोधपुर

(15) सिनकोना वृक्ष ⇒

- यह औषधिय वृक्ष है।
- मलेरिया रोग के उपचार हेतु छाल द्वारा " कुनेन की दवा " बनाई जाती है।
विस्तार → मा० आबु (सिरोही)

(16) अर्जुन का वृक्ष ⇒ " रेशम के कीट पालन "

→ यह औषधीय वृक्ष की श्रेणी में आता है।
→ इस वृक्ष की छाल का उपयोग रुधिर / रक्त को पतला करने के लिए किया जाता है।
विस्तार → कोटा, झालावाड़, बांसवाड़ा, उदयपुर etc.

(17) खेजड़ी ⇒

वैज्ञानिक नाम → Prosopis cineraria।

उपनाम → RJ / रेगिस्तान / मरुस्थल का कल्पवृक्ष

जांटी - हरियाणा - पंजाब

शमी - विश्नोई

सीमलो - Local

बन्ना बन्नी - कन्नड़

पेयमये - तमिल

धोकड़ा - सिंधि

पंचकुटा → सागरी (फली)
काचरी
कुमठ के बीज
केर व गुंदा के बीज

- राज्य वृक्ष - 13 oct 1983

पुष्प - मिंझर

पत्ति - लुम / बकरी

फली - सांगरी —सुखने पर→ खोका / खोखा

पुजा → दशहरा पर्व (जन्माष्टमी, गोगा नवमी, तेजाजी दशमी

RJ में सर्वाधिक खेजड़ी वृक्षों वाला
- → प्रदेश → शेखावाटी प्रदेश
- → जिला → नागौर (डीड. कुचा.)

- अमृता देवी मृग वन, खेजड़ली / जोधपुर

→ विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला खेजड़ली, जोधपुर में मनाया जाता है।
└ 12 sep.

★ खेजड़ली हत्याकाण्ड ⇒

स्थान → खेजड़ली गांव / जोधपुर रियासत / मारवाड़

शासक → अभय सिंह

तिथी → भाद्रपद शुक्ल दशमी - 1730 ई.

कुल शहीद → 363 लोग (खेजड़ी के वृक्षों की रक्षार्थ)

नेतृत्वकर्त्ता → अमृता देवी विश्नोई

(इनके पति "रामोजी" व तीन पुत्रियाँ "रतनी, भागु, आशु" भी शहीद हुए)

हत्याकाण्ड आदेशकर्त्ता → हाकीम गिरधर दास भण्डारी

खेजड़ली महोत्सव → राज. सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 12 sep को 1978 से मनाया जा रहा है।

पुरस्कार → पर्यावरण के क्षेत्र में RJ का सर्वोच्च पुरस्कार अमृता देवी के नाम पर रखा गया।

प्रथम पुरस्कार → गंगाराम विश्नोई (2001 में)

राशि → (1) 50 हजार - व्यक्ति विशेष

(2) 1 लाख - संगठन हेतु

Opration खेजड़ा → 1991

डाक टिकट → 1988 में केन्द्र सरकार द्वारा 60 पैसे का।

साका → अमृता देवी द्वारा दिया गया बलिदान

खड़ाना → विश्नोई समाज इस बलिदान को "खड़ाना" करता है।

"शमी" → बीकानेर रियासत के प्रतीक चिन्ह - खेजड़ी वृक्ष का नाम।

→ खेजड़ी वृक्ष के नीचे "गोगाजी व झुंझार जी" की "थान" होती है।

→ परमार / पंवार वंश के आराध्य खेजड़ी वृक्ष है।

☆ राजस्थान की प्रमुख घास ☆

(1) बुर घास ⇒

विस्तार → बीकानेर

→ सुगन्धित घास

(2) खस घास ⇒

→ सर्वाधिक सुगन्धित घास।

उपयोग → इत्र, शरबत निर्माण

विस्तार → SM + टोंक + भरतपुर

(3) धामण घास ⇒

RT में प्रकार → Tridox

उपयोग → (1) मधुमेह रोग में औषधी

(2) दुधारु पशुओं में भैंस व बकरी को खिलाने में।

विस्तार → (1) लाठी सीरीज

(2) सम्पूर्ण प॰ मरुस्थल

(4) करड़ घास ⇒

– यह पर्वतीय व मैदानी प्रदेशों की घास है।

विस्तार → उदयपुर + डूंगरपुर

(5) सेवण घास ⇒

उपनाम → स्थानिय नाम → लीलोण
→ वानस्पतिक नाम → लेसीऊरस सीडिकुस / Luciurus sudicus

विस्तार → लाठी सीरिज क्षेत्र (जैसलमेर)

→ गोड़ावण की शरणस्थली / आश्रयस्थली है।

→ बालुका स्तुपों के स्थायीकरण हेतु उपयोग किया जाता है।

→ पौष्टिक घास (पशुओं के लिए)

(6) ऐंचा घास ⇒

विस्तार → केवला देव घना पक्षी विहार, भरतपुर

→ इस घास में अक्सर पक्षियों के पंजे फंस जाते हैं।

(7) मौबिया / मौंचिया घास / रैटेण्डस साइप्रस ⇒

→ यह एक पौष्टिक घास है।

विस्तार → तालछापर अभ्यारण्य

(8) नेपियर / हाथी घास ⇒

- वर्तमान समय में इसका उपयोग मवेशियों के हरे चारे के रूप में किया जा रहा है क्योंकि यह अति पोष्टिक घास की श्रेणी में आता है।

(9) भुरात घास
(10) भूरट घास] - प० मरुस्थल में।

"महत्त्वपुर्ण तथ्य"

★ विश्नोई जाति ⇒ जीव रक्षक जाति
★ बावरिया जाति ⇒ जीव भक्षक जाति
★ बाब ⇒ रियासतकाल में वनों का उपयोग करने हेतु दिया जाने वाला कर।
★ ओरण / देव वन ⇒ मंदिर के आसपास की भुमि।
★ खेड़ाणा / साका ⇒ वनस्पति व जीवों-जन्तुओं की रक्षार्थ प्राणों का दिया जाने वाला बलिदान।
★ त्रिफला ⇒ आंवला + हरड़ + बहेड़ा
★ पंचकुटा ⇒ काचरी + सागरी + कुमठ + गुंदा के फुल + कैर
★ खम्नोर (राजसमंद) ⇒ RJ में सर्वाधिक
→ चैती / दाश्मिक गुलाब
→ चन्दन के वृक्ष

	वृक्ष	वैज्ञानिक /वानस्पतिक नाम
1.	महुआ	लोंगफोलिया
2.	सागवान	टेक्टोना ग्रेंडिस
3.	कत्था	अकेसिया - कटेचु
4.	धौंक	एनोजिस पण्डुला
5.	ढाक	ब्युतिया मोनो स्पर्मा (केसरिया)
6.	रोहिड़ा	टेकोमेला अण्डुलेटा

★ प्रमुख / सप्ताह ⇒

21 मार्च → विश्व वानिकी दिवस

22 मार्च → विश्व जल दिवस

22 अप्रैल → विश्व पृथ्वी दिवस

22 मई → विश्व जैवविविधता दिवस

5 जुन → विश्व पर्यावरण दिवस

1-7 जुलाई → वानिकी सप्ताह

16 Sep. → विश्व ओजोन दिवस

1-7 Oct. → वन्य जीव - जन्तु सप्ताह

3 Dec. → विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस

14 Dec. → विश्व ऊर्जा दिवस

★ गाजर घास / कोंग्रेस घास / पॉर्थेनियम घास ⇒

→ यह एक खरपतवार है।

→ USA से गेहूँ के बीज के साथ यह खरपतवार भारत पहुँची।

→ इसके फुलों से बदबु / दुर्गन्ध आती है।

→ लम्बे समय तक इसके सम्पर्क में रहने पर श्वसन व त्वचा संबंधि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

वन नीति

अर्थ → वनों को संरक्षण देने के लिए बनाई गई नियमावली वन नीति कहलाती है।

प्रथम वन नीति → 1952

संशोधित वन नीति → 1988

↳ कथन - "पर्यावरण की दृष्टि से किसी भी प्रदेश के 33% भाग पर वन क्षेत्र का होना आवश्यक है।"

Rajasthan → प्रथम वन नीति → 17/18 Feb 2010

↳ नविनतम वन नीति → 5 Jun 2023

↳ by अशोक गहलोत सरकार

वन रिपोर्ट

→ ISFR → Indian state Forest Report

अर्थ → वनों से सम्बन्धित गणितीय मान वन रिपोर्ट के अन्तर्गत आता है

तैयारकर्त्ता → भारतीय वन सर्वेक्षण संस्थान, देहरादुन (UK), 1981

↳ ~~Indian~~ Forest Survey of India (FSI)

प्रकाशित कर्त्ता → केन्द्रीय मंत्री

(पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली)

प्रथम वन रिपोर्ट → 1987 ई०

वर्तमान वन रिपोर्ट → 17वी॰ - 2021 (डाटा पूर्ण प्राप्त)
18वी॰ - 2023 (डाटा अपर्याप्त)

वन रिपोर्ट 2021-22 ⇒

→ गणना की दृष्टि से 17वी॰ रिपोर्ट

प्रकाशित तिथी → 13 Jan 2022

प्रकाशितकर्त्ता → भूपेन्द्र यादव

→ इस रिपोर्ट में "रिसोर्स सेट -2 उपग्रह" की सहायता ली गई।

वन क्षेत्र / अभिलेखित वन (RJ. में) → 32864.62 km^2 (9.60%)

- RJ के कितने प्रतिशत भूभाग पर वन क्षेत्र फैला है → 9.60%
- RJ में वनावरण = 16654.96 km^2 / 16655 km^2
- RJ में वनावरण (In %) = 4.87%
- RJ में वृक्षावरण = 8733 km^2
- RJ में वृक्षावरण (In %) = 2.55%
- RJ में वनावरण + वृक्षावरण = 4.87 + 2.55 = 7.42%
- 2019 की तुलना में 2021 में कितने क्षेत्र में वृद्धि अंकीत की गई = 25.45 km^2 (0.02%) (वन क्षेत्र / वनावरण)
- वृक्षावरण में वृद्धि = 621 km^2
- प्रति व्यक्ति औसतन वनावरण व वृक्षावरण = 0.037 हेक्टेयर

★ प्रशासन / कानूनी आधार पर ⇒

क्र. सं.	वन	क्षेत्रफल	%	सर्वाधिक	
1.	आरक्षित वन	12.176.24 km^2	37.05%	उदयपुर	
2.	संरक्षित वन	18543.22 km^2	56.43%	बारां	Max
3.	अवर्गीकृत वन	2143.04 km^2	6.52%	बीकानेर	Min

★ सघनता की दृष्टि से ⇒

वन	क्षेत्रफल	%	सर्वाधिक	2019 की तुलना में 2021 में परिवर्तन
(1) सघन वन	78 km^2	0.02%	अलवर	अपरिवर्तित
(2) मध्यम वन	4368 km^2	1.28%	Min उदयपुर	वृद्धि = 27.45 km^2
(3) बिखरे वन	12208 km^2	3.57%	उदयपुर	कमी = 2 km^2
कुल वन =	16654.96 km^2	4.87%	Max वृद्धि →	25.47 km^2

वन क्षेत्रफल (Km^2)

सर्वाधिक (UAP)

(1) उदयपुर ($2753.39 km^2$)
(2) अलवर ($1195.91 km^2$)
(3) प्रतापगढ़ ($1033.77 km^2$)
~~(4) करौली (15.28%~~
(4) बांरा ($1010.05 km^2$)
(5) चित्तौडगढ़ ($990.05 km^2$)

न्युनतम (CHJ)

(1) चूरु ($77.69 km^2$)
(2) हनुमानगढ़ ($92.97 km^2$)
(3) जोधपुर ($109.25 km^2$)
(4) गंगानगर ($115.09 km^2$)
(5) दौसा ($116.60 km^2$)

वन क्षेत्रफल प्रतिशत (%)

सर्वाधिक (UPS)

(1) उदयपुर (23.49%)
(2) प्रतापगढ़ (23.24%)
(3) सिरोही (17.49%)
(4) करौली (15.28%)
(5) बांरा (14.45%)

न्युनतम (JCJ)

(1) जोधपुर (0.48%)
(2) चुरु (0.56%)
(3) जैसलमेर (0.84%)
(4) बीकानेर (0.92%)
(5) हनु०/नागौर (0.96%)

वनावरण क्षेत्र

सर्वाधिक वृद्धि वाले जिले

(1) अजमेर (25.45 %)
(2) पाली (26.01%)
(3) बीकानेर (24.10%)

सर्वाधिक कमी वाले जिले

(1) जालौर (32.46%)
(2) करौली (26.16%)
(3) सिरोही (13.49%)

Note ⇒ RJ के 19 जिलों में वृद्धि जबकि 14 जिलों में कमी अंकित की गई।

★ राजस्थान में झाड़ियाँ / SCRUB ⇒

कुल क्षेत्रफल → 4808.51 km^2

% भू-भाग → 1.41%

सर्वाधिक झाड़ियों वाला जिला ⇒ (1) पाली
(2) करौली
(3) जयपुर

न्यूनतम झाड़ियों वाला जिला ⇒ (1) हनुमानगढ़
(2) गंगानगर
(3) चुरू

★ वन्य जीव - जन्तु संरक्षण ★

- RJ में वन्य जीवों की संख्या -

(1) पादप - 2500 < 2100 वन, 400 फसल

(2) पक्षी - 450

(3) सरिसर्प - 57

(4) स्तनधारी - 50

(5) उभयचर - 12

Ecosystem

(1) मरूस्थल

(2) अरावली

(3) पुर्वी मैदान

(4) द. पुर्वी पठार

★ RJ में वन व वन्य जीव संरक्षण हेतु प्रयास ★

-> वन व वन्य जीव संरक्षण मुल संविधान में राज्य सुची का विषय है।

-> इसको संविधान संशोधन करके समवर्ती सुची में शामिल किया गया है।

-> भारतीय संविधान में निम्नलिखित प्रावधानों के अन्तर्गत वन व वन्यजीव संरक्षण का उल्लेख है ->

अनुच्छेद - 47 ⇒

अप्रत्यक्ष रूप में लोक स्वास्थ्य द्वारा बेहतर पर्यावरण का उल्लेख किया गया है।

अनुच्छेद 48 (क) ⇒

- राज्य के नीति निर्देशक तत्व द्वारा राज्यों को वन व वन्य जीव संरक्षण एवं संवर्धन का उल्लेख है।

अनुच्छेद 51 (क) 7. ⇒

- मौलिक कर्तव्यों के रूप में प्रत्येक नागरिक को वन, वन्यजीव, झील व नदियों के संरक्षण व संवर्धन का उल्लेख है।

केन्द्र सरकार के प्रयास ⇒

1854 → British काल में Lord dalhogi के समय वन विभाग की स्थापना।

1894 → British काल की प्रथम वन नीति जारी की गई।

1950 → आजादी के बाद "वन बोर्ड" की स्थापना।

1952 → भारत की प्रथम वन नीति

- वन आवरण - 33% भाग पर
- पर्वतीय भाग - 60-65%
- मैदानी भाग - 20% भाग पर वनआवरण होना चाहिए।

1972 → भारतीय वन्य जीव- जन्तु व पक्षी संरक्षण अधिनियम

1973 → └→ RJ में लागु

1980 → भारतीय वन अधिनियम

1988 → (1) संशोधित वन नीति

(2) संशोधित वन अधिनियम

1986 → पर्यावरण संरक्षण अधिनियम निर्मित

2002 → जैव विविधता नियम।

2003 → जैव विविधता बोर्ड, चेन्नई में स्थापित।

☆ राजस्थान सरकार के प्रयास ☆

1901 → टोंक रियासत द्वारा वन्य जीव जन्तु व पक्षी के शिकार पर प्रतिबन्ध लगाया गया।

1910 → जोधपुर रियासत द्वारा वन्य जीव जन्तु हेतु वन संरक्षण नीति लाई।

1935 → अलवर रियासत के द्वारा वन संरक्षण कानुन बनाया गया।

1951 → RJ सरकार द्वारा "वन्य जीव जन्तु व पक्षी संरक्षण अधिनियम" लाया गया।

1953 → वन संरक्षण अधिनियम

1955 → "वन्य जीव बोर्ड" की स्थापना
↳ अध्यक्ष – मुख्यमंत्री

1972 → भारत सरकार द्वारा "भारतीय वन्य जीव जन्तु व पक्षी संरक्षण अधिनियम" लाया गया।

1 Sep. 1973 → भारतीय अधिनियम को RJ में लागु किया।

18 Feb 2010 → RJ की पहली वन नीति घोषित।

14 Sep. 2010 ⇒ जैव विविधता बोर्ड व नियम बनाया गया।

2010 ⇒ "Ecotourism Policy" लायी गई।

↳ स्थल → MT Abu व सरिस्का

★ वन्य जीव संरक्षण हेतु स्वस्थाने व बाह्य स्थानें संरक्षण ⇒

(A) स्वस्थानें संरक्षण (Insite conservation) ⇒

- ऐसा संरक्षण स्वरूप जिसमें जीवधारियों को उनके प्राकृतिक निवास में ही संरक्षण दिया जाता है।

Ex. ⇒ राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्य

(B) बाह्य स्थानें संरक्षण (Exsite conservation) ⇒

- ऐसा संरक्षण स्थल जहाँ जीव धारियों को अन्य स्थान से लाकर संरक्षण दिया जाता है।

Ex. ⇒ जन्तु आलय, जैविक उद्यान, मृगवन व conservation स्थल।

In Rajsthan ⇒

(1) बाघ परियोजना = 5

(2) जन्तु आलय = 5

(3) जैविक उद्यान = 4/5

(4) मृगवन = 7

(5) रामसर स्थल = 2

(6) अभ्यारण्य = 26

(7) राष्ट्रिय उद्यान = 3/5

(8) संरक्षित क्षेत्र = 36

(9) आखेट निषेध क्षेत्र = 33

★ बाघ परियोजना / Project Tiger (1973) ⇒

└ भारत में कुल = 56

अर्थ → बाघों की घटती संख्या से चिंतित होकर बाघों को बचाने हेतु किया गया कार्य।

शुरुआत → 1 April 1973

प्रथम निर्देशक → कैलाश साँखला [Tigerman of India]

- राजस्थान में प्रमुख बाघ परियोजना ⇒

(1) रणथम्भौर बाघ परियोजना (1973) ⇒ 6th

└> विस्तार - SM + टोंक + करौली + बुँदी

(2) सरिस्का बाघ परियोजना (1978 - 79) ⇒ 10th

↳ विस्तार → अलवर + जयपुर + कोटपुतली - बहरोड़

(3) मुकुन्द्रा हिल्स बाघ परियोजना (2013) ⇒ 44th

↳ विस्तार → कोटा + चित्तौड़ + झालावाड़ + बुंदी

(4) रामगढ़ - विषधारी बाघ परियोजना (16 May 2022) ⇒ 52th

↳ विस्तार → बुंदी - कोटा

(5) धौलपुर - करौली बाघ परियोजना (6 Oct 2023) ⇒ 55th

↳ विस्तार → धौलपुर करौली

NOTE ⇒ RJ की सबसे बड़ी बाघ परियोजना →
रणथम्भौर बाघ परियोजना (1530.94 km^2)

- RJ की सबसे छोटी बाघ परियोजना →
धौलपुर करौली बाघ परियोजना (599.64 km^2)

★ जन्तुआलय / चिड़ियाघर ★

→ इसका प्रबंधन व नियंत्रण केन्द्र सरकार करती है।

→ इन्हें बाह्य स्थानों / Exsite संरक्षण स्थल में रखा जाता है।

→ RT में 5 जिलों में स्थित है।

(1) जयपुर जन्तुआलय - जयपुर ⇒ 1876 - प्राचीन, सबसे बड़ा
  ↳ निर्माण - रामसिंह -II द्वारा

(2) उदयपुर जन्तुआलय - उदयपुर ⇒ 1878, सबसे छोटा

(3) बीकानेर जन्तुआलय - बीकानेर ⇒ 1922 , बन्द

(4) जोधपुर जन्तुआलय - जोधपुर ⇒ 1936
  ↳ गोडावण कृत्रिम प्रजनन केन्द्र

(5) कोटा जन्तुआलय - कोटा ⇒ 1954 , नवीनतम

★ आर्द्र भूमि क्षेत्र / नम भूमि क्षेत्र / रामसर स्थल / wet land ★

(1) केवलादेव रामसर स्थल ⇒ भरतपुर 1981

(2) सांभर रामसर स्थल ⇒ जयपुर → 1990 प्रसिद्ध जीव → राजहंस / फ्लेमिंगो

Note ⇒ विश्व आर्द्रता / रामसर दिवस ⇒ 2 Feb

☆ RJ के जैविक उद्यान / Biological Park ☆ - ④

- यह Exsite conservation का उदाहरण है।

(1) सज्जनगढ़ जैविक उद्यान ⇒ उदयपुर , 2015

(2) नाहरगढ़ जैविक उद्यान ⇒ जयपुर , 2016

↳ RJ की प्रथम लॉयन सफारी (2018) में प्रारम्भ की गई।

(3) माचिया सफारी जैविक उद्यान ⇒ जोधपुर , 2016

(4) अभेडा जैविक उद्यान ⇒ कोटा , 2021

☆ मरुधरा जैविक उद्यान - बीकानेर → प्रस्तावित

☆ मृगवन ☆ - ⑦

संरक्षण → चीतल, हिरण, सांभर, चौसिंगा, बारहसिंगा

(1) अमृता देवी मृगवन → खेजडली, जोधपुर

(2) माचिया सफारी मृगवन → जोधपुर

(3) पुष्कर मृगवन → पुष्कर, अजमेर

(4) अशोक विहार मृगवन → जयपुर

(5) संजय मृगवन → जयपुर (शाहपुरा) → पुर्णतः मृग विहिन

(6) सज्जनगढ़ मृगवन → उदयपुर

(7) चित्तौड़गढ़ मृगवन → चित्तौड़गढ़

★ अभ्यारण्य ★

अभय = बिना भय के
आरण्य = जंगल / वन

→ अभ्यारण्य केन्द्र व राज्य सरकार दोनो द्वारा निर्धारित किए जा सकते हैं।

→ RT में वर्तमान में 26 अभ्यारण्य स्थित हैं।

कुल क्षेत्रफल ⇒

सबसे बड़ा ⇒ (i) राष्ट्रीय मरु उद्यान, जैसलमेर + बाड़मेर - $3162 km^2$

(ii) कैला देव अभ्यारण्य - करौली + SM

सबसे छोटा ⇒ ~~(1) सरिस्का - 43 km ?~~

(2) सज्जनगढ़, उदयपुर

[1] राष्ट्रीय मरु उद्यान ⇒

- विस्तार - जैसलमेर ($1900 km^2$) + बाड़मेर ($1262 km^2$)
- RT का सबसे बड़ा अभ्यारण्य ($3162 km^2$)।
- वर्ष 1981 में अभ्यारण्य का दर्जा मिला।
- सर्वाधिक → गोडावण पक्षी
- गोडावण की शरणस्थली
- "आकल वुड फॉसिल पार्क" इसी अभ्यारण्य में स्थित है।

[2] दर्रा अभ्यारण्य ⇒

स्थित ⇒ कोटा + झालावाड़

- दर्जा → 1955 ई.
- क्षेत्रफल → 227.63 km^2
- यहाँ रियासत कालीन शिकारगाह भूमि । औदिया मिलते हैं।
- प्रसिद्ध स्थल ⇒

(1) गागरौन दुर्ग → झालावाड़

- → आहु व कालीसिन्ध के संगम पर
- → यहाँ "संत पीपा की छतरी" स्थित है।
- → यहाँ मानव के समान हुबहु बोलने वाला "हीरामन तोता" मिलता है।

(2) रावठा महल → कोटा

(3) अबली मीणी का महल → कोटा

[3] सारिस्का अभ्यारण्य ⇒

- नामकरण → सरस के वृक्षों की प्रधानता मिलने के कारण।
- स्थित → अलवर
- क्षेत्रफल → 544.22 km^2
- 1955 → अभ्यारण्य का दर्जा प्राप्त।
- 1978-79 → बाघ परियोजना में शामिल।
- 1998 → यहाँ "कैलाश साँखला प्रकृति व्याख्यान केन्द्र" बनवाया गया।

प्रमुख जीव-जन्तु ⇒ सांभर, बन्दर, मोर, हरे कबूतर, गिद्ध, लंगुर, भेडिये, जरख, तेंदुआ, बाघ आदि।

Note ⇒ RJ में सर्वाधिक मोर व बन्दर "सरिस्का" में मिलते हैं।

आकर्षण का केन्द्र → हरे कबूतर व रिसस बन्दर

प्रमुख नदी ⇒ रूपारेल नदी।

प्रमुख स्थल ⇒

भृतहरी धाम → कनफटे साधुओं के लिए।

पाण्डुपोल → लेटे हुए हनुमान जी की प्रतिमा के लिए।

पारासर → जलाशय

नीलकण्ठ → महादेव मंदिर

नारायणी धाम → नारायणी माता जी मंदिर
↳ सैन समाज व मीणा समाज उपासक।

काकनवाड़ी का पठार → कांकनवाड़ी किले के लिए।

सरिस्का पैलेस → पर्यटन क्षेत्र। फिल्म जगत के लिए

★ सरिस्का "अ" अभ्यारण्य ⇒ अलवर

- 2012 में अभ्यारण्य का दर्जा मिला।
- 2022-23 में अभ्यारण्य का दर्जा समाप्त।

- क्षेत्रफल की दृष्टि से RJ का सबसे छोटा अभ्यारण्य

क्षेत्रफल = 3.01 km^2

[4] सज्जनगढ़ अभ्यारण्य ⇒

- स्थित → उदयपुर
- वर्ष 1987 में अभ्यारण्य बना।
- वर्तमान में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा अभ्यारण्य
- क्षेत्रफल → 5.19 km^2
- RJ का 1st Biological Park (जैविक उद्यान)

[5] तालछापर अभ्यारण्य ⇒

- स्थित → चुरु
- दर्जा → 1962
- क्षेत्रफल → 7.19 km^2
- RJ का क्षेत्रफल की दृष्टि से दुसरा सबसे छोटा अभ्यारण्य
- प्रसिद्ध जीव → (1) काले / कृष्ण हिरन
  - (2) कुरंजा पक्षी →
    - → वैज्ञानिक नाम - डेमोइसेल क्रेन
    - → संदेश वाहक / विदेशी पक्षी
    - → विरह के गीत गाए जाते हैं।

Note → RJ में सर्वाधिक कुरंजा पक्षी खीचन गाँव, फलौदी में मिलते हैं।

- तालछापर अभ्यारण्य में मोथिया / मौचिया / रौटेण्डस साइप्रस घास पाई जाती हैं।

[6] सीतामाता अभ्यारण्य ⇒

- नामकरण → सीतामाता मंदिर के चारों ओर का वन्य क्षेत्र।
- स्थित → चित्तौड़गढ़ + प्रतापगढ़ + सलुम्बर
- निर्माण वर्ष → 1979
- क्षेत्रफल → 422.94 km^2

→ प्रमुख स्थल → (1) वाल्मीकी आश्रम
(2) लव - कुश झरनें
(3) लाखिया - भाटा (शैल चित्रण)

सर्वाधिक जड़ी-बुटियां →

→ सर्वाधिक वृक्ष → महुआ + सागवान

→ प्रसिद्ध जीव जन्तु →
(1) उड़न गिलहरी - आकर्षण का केन्द्र
(2) चौंसिगा - शरणस्थली
(3) चीतल मृग - जन्मस्थली
(4) पेड़ों पर मिलनें वाले मेंढ़क
(5) Pengolian / रात्रिचर / आडा उला

सरमई - करमई नदी बहाव क्षेत्र

[7] राष्ट्रीय घड़ियाल / राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य ⇒

- चम्बल नदी के दोनो ओर 1-1 km क्षेत्र में मिलने वाला वन्यक्षेत्र
- विस्तार → कोटा + बुंदी + SM + करौली + धौलपुर
- दर्जा → 1979 में
- क्षेत्रफल → 564.03 km^2
- प्रमुख जीव-जन्तु → ऊद बिलाऊ व घड़ियाल
- उपनाम - चम्बल अभ्यारण्य।
- सबसे लम्बा अभ्यारण्य
- In 3 state → MP + RJ + UP

[8] कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य ⇒

- विस्तार → राजसमंद (पाली + उदयपुर)
- दर्जा → 1971
- सर्वाधिक संख्या में "भेड़िये" मिलने के कारण - "भेड़ियों की शरणस्थली"
- यहाँ 1444 खम्भो का रणकपुर जैन मंदिर स्थित है। + हाथी गुडा दर्रा

[9] मा० आबु अभ्यारण्य ⇒

- विस्तार → सिरोही
- दर्जा → 2008
- प्रसिद्ध जीव → जंगली मुर्गे - मुर्गीया, काले भालु / रीछ
- विश्व की एकमात्र वनस्पाति - डिकल्पटेरा आबु एन्सिस / अम्बरतरी इसलिए इसे Eco-sensetive zone में शामिल किया गया हैं। इस zone में पाई जाने वाली कारा घास की वजह से नक्की झील में प्रदुषण फैलता है।

NOTE ⇒

जंगली मुर्गे - सिरोही — वन्य जीव जन्तु

देशी मुर्गे - बांसवाड़ा
फॉर्मी मुर्गे - अजमेर (अण्डो की टोकरी)
कड़कनाथ मुर्गे - बांसवाड़ा / डुंगरपुर
— पशुधन

[10] रामगढ़ - विषधारी अभ्यारण्य ⇒

- स्थित → बूँदी (कोटा)
- प्रसिद्ध → जहरीलें सांपो की प्रजाति
- उपनाम → बाघों का जचाघर / जच्चाघर
- RJ का 4^{th} Project tiger spot
- मेज नदी का बहाव क्षेत्र

[11] शेरगढ़ अभ्यारण्य ⇒

- स्थित → बांरा
- सर्वाधिक संख्या में सांप मिलते हैं।
  " सांपो की शरणस्थली "
- परवन नदी बहाव क्षेत्र

[12] जवाहर सागर अभ्यारण्य ⇒

- स्थित → कोटा (चित्तौड़) + बुँदी
- उत्तर भारत का सबसे बडा सर्प उद्यान स्थित है।
- घडियालों का संरक्षण स्थल
- स्थल → (1) घडियाला महादेव
  (2) घेबरनाथ मंदिर

[13] फुलवारी की नाल अभ्यारण्य ⇒ उदयपुर

- मान्सी व वाकल नदी बहाव क्षेत्र।
- पेड पर पाए जानें वाले सांपों की प्रजाति मिलती है।
- इस क्षेत्र में पलास के वन मिलते हैं।
- RJ की सबसे लम्बी जल सुरंग "देवास" स्थित है।

[14] नाहरगढ़ अभ्यारण्य ⇒ (1980), 52.41 km^2

- स्थित → जयपुर
- यहाँ सर्वाधिक संख्या में चिंकारा पाए जाते हैं जिस कारण "चिंकारा की शरण स्थली" इस अभ्यारण्य को माना जाता हैं।
- जैविक उद्यान निर्मित

[15] कैला देवी अभ्यारण्य ⇒

- विस्तार → करौली + SM
- दर्जा → 1983
- RJ का दुसरा सबसे बड़ा अभ्यारण्य
- क्षेत्रफल → 676.82 km^2

[16] बस्सी अभ्यारण्य ⇒ चित्तौड़

- बहाव → ओराई नदी
- प्रसिद्ध → चौसिंगो चीतल व बगिरो

[17] भैंसरोडगढ़ अभ्यारण्य ⇒ चित्तौड़

- बहाव → बामनी नदी
- प्रसिद्ध → भैंसरोडगढ़ किला
- जीव → चौसिंगों

[18] रामसागर अभ्यारण्य
[19] केसरबाग अभ्यारण्य → धौलपुर · पंचीरा पक्षी के लिए प्रसिद्ध।
[20] वन विहार अभ्यारण्य

Note ⇒ "वन विहार राष्ट्रीय उद्यान = MP"

[21] बंध बारेठा अभ्यारण्य ⇒ भरतपुर
- कुकुंद नदी का बहाव क्षेत्र।
- केवलादेव के बाद दूसरा सर्वाधिक पक्षियों वाला क्षेत्र।

[22] जयसमंद अभ्यारण्य ⇒ उदयपुर
- उपनाम → "जलचरो की बस्ती"
- जीव → जांगिल व क्रब
- प्रसिद्ध → जयसमंद झील व बांगिरो

[23] जमवारामगढ़ अभ्यारण्य ⇒ जयपुर
- जमुवाई माता का मंदिर।
- धौकड़ा वन की प्रधानता।

[24] सवाई मानसिंह अभ्यारण्य
[25] सवाई माधोपुर अभ्यारण्य → SM (नाविन्तम)

[26] रावली टॉडगढ़ अभ्यारण्य ⇒ ब्यावर + राजसमंद + पाली
- यहाँ गोरम घाट / RJ का दार्जलिंग स्थित है।

★ राष्ट्रीय उद्यान / National Park ★

- इनका निर्धारण केन्द्र सरकार के द्वारा किया जाता है यह ~~ICUN~~ IUCN (International Union of Conservation of Nature 1948) की अनुसुची -2 के अनुसार निर्मित किए जाते हैं।
- वर्तमान RJ में इनकी संख्या – 3/5 → Acc. to भारत सरकार
  ① सारिस्का
  ② राष्ट्रीय मरु उद्यान
- कुल क्षेत्रफल (In RJ) =

[1] रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान ⇒

- विस्तार → सवाई माधोपुर
- 1955 में → अभ्यारण्य बना।
- 1973 में → इसे Project tiger स्थल बनाया गया।
- 1980 में → इसे National Park में शामिल किया गया।
- RJ की सबसे बडी बाघ परियोजना।
- क्षेत्रफल → 282.03 km^2
- यहां सर्वाधिक बाघ मिलने के कारण इसे "RJ के बाघो का घर" कहा जाता है।
- प्रसिद्ध बाघ | बाघिन → मछली, नुर, चंगेज खाँ, सुल्तान, T-19, T-24 आदि।

★ मछली बाघिन ⇒

- उपनाम → T-16
  टाइग्रेस क्वीन
  क्वीन ऑफ रणथम्भौर
  लेडी ऑफ लेक
  क्रोकोडाइल किलर
  द मोस्ट फेमस टाइगर
  बाघों की अम्मा
  RT के बाघो की जननी

- सबसे उम्र दराज बाघिन
- यह पर्यटकों को सर्वाधिक बार दिखाई दी इसलिए इसे वर्ष 2009 में "लाइफ टाइम अचिवमेंट पुरस्कार" भी दिया गया है।

- पुत्री ⇒ कृष्णा बाघिन
- मृत्यु ⇒ 2016
- 2013 में डाक टिकट
- वन विभाग द्वारा "मछली पुरस्कार दिया जाता है।
- स्मारक → जोगीमहल
- प्रसिद्ध वाइल्डलाइफ फिल्मकार "नल्ला मुत्थु" ने मछली पर "द मोस्ट फेमस टाइगर - मछली" नामक डॉक्युमेंट्री बनाई (47 min)।
  - ↳ अमेरिकी लेखिका "केटी योकोम" की किताब "द थ्री वेज टु डिसअपीयर" में मछली की कहानी तथा front page पर फोटो।

Note ⇒ हाल ही में चर्चा में बाघिन → रिद्धि बाघिन (कृष्णा बाघिन की पुत्री)

- रणथम्भौर के प्रमुख स्थल ⇒ (1) त्रिनेत्र गणेश मंदिर
(2) रणथम्भौर दुर्ग
(3) रामबाग झील
(4) मलिक तालाब
(5) पद्म तालाब
(6) संत सद्रुद्दीन की दरगाह
(7) 32 खम्भों की छतरी।

Note :- 32 खम्भों की छतरी - माण्डलगढ़ [भीलवाड़ा]

[2] केवलादेव / घना पक्षी विहार ⇒

- नामकरण → केवला देव (महादेव) मंदिर के चारों ओर का वन्य क्षेत्र
  - यहाँ घनी वनस्पति मिलने के कारण इसे घना पक्षी विहार से जाना जाता है।
- विस्तार → भरतपुर
- 1956 → अभ्यारण्य दर्जा
- 1981 → रामसर क्षेत्र में शामिल
- 1981 → राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा डॉ० सलीम अली के प्रयासों से मिला।
- डॉ० सलीम अली को "पक्षी प्रेमी" के नाम से जाना जाता है। इसलिए इन्हें "Birdman of India" का उपनाम मिला।
- 1985 → इसे युनेस्कॉ की सुची में शामिल किया गया।

- 2005 → यहाँ "डॉ० सलीम अली इन्टरप्रिटेशन सेन्टर" की स्थापना की गई।
- RJ का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान।
- क्षेत्रफल ⇒ $28 \cdot 74 \, km^2$
- यहाँ सर्वाधिक संख्या में पक्षी पाए जाते है इसलिए इसे "पक्षीयों का स्वर्ग" कहा जाता है।
- यहाँ लगभग 113 - विदेशी पक्षी प्रजाती तथा 382 स्वदेशी पक्षी प्रजाति मिलती है।
- आकर्षण केन्द्र - "साइबेरियन सारस"
- RJ का एकमात्र ऐसा राष्ट्रीय उद्यान जिसके चारों ओर पक्की दिवार का निर्माण किया गया।
- घुमने के लिए Best time → Nov - Feb
- यहाँ सर्दियो में धुप सेकते हुए अजगर मिलते है जिसे पाइथन प्वांइट के नाम से जाना जाता है।
- यहाँ ऊँचा घास पाई जाती है।

NOTE ⇒ यह राष्ट्रीय उद्यान "स्वर्णिम त्रिकोण" व NH-21 पर स्थित है।

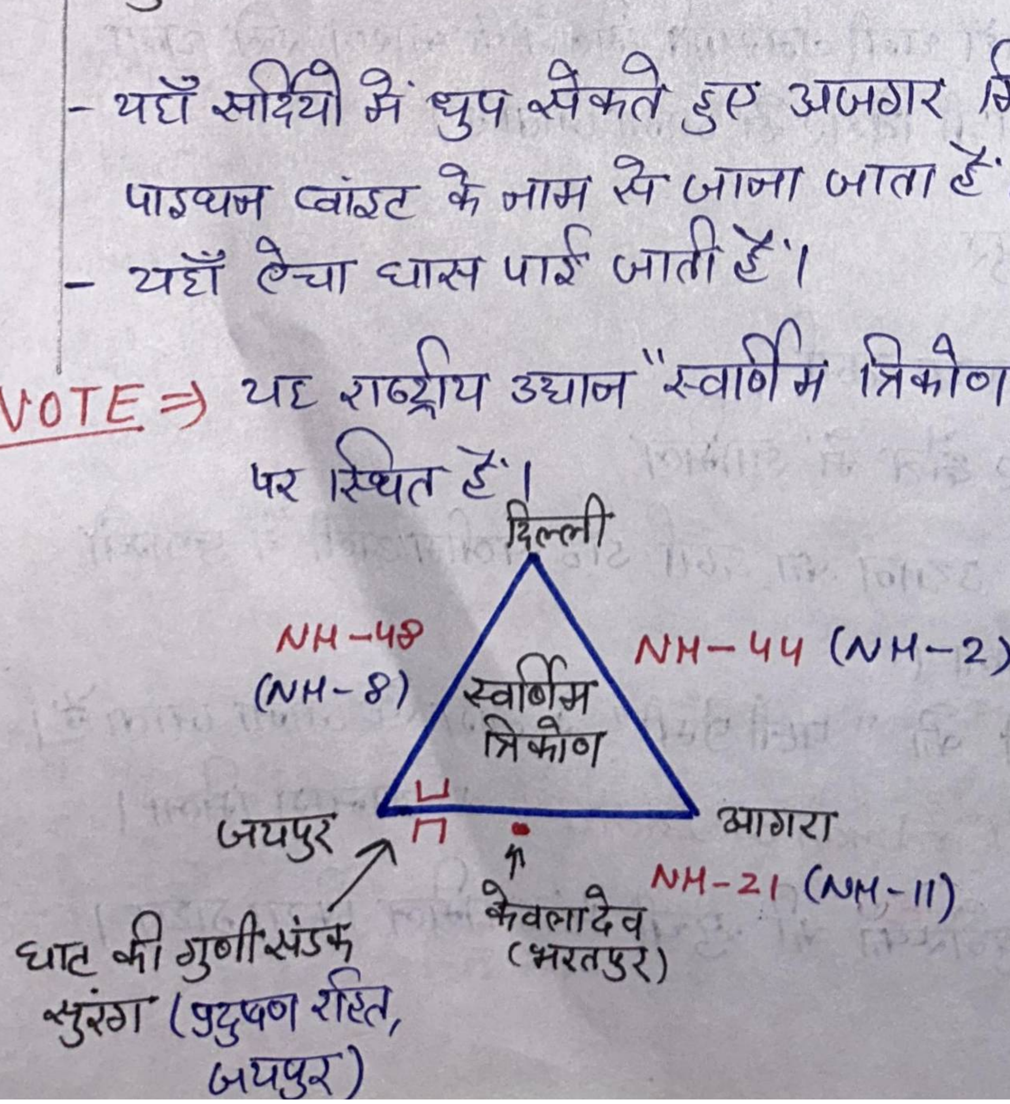

[3] मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान ⇒

- विस्तार → कोटा + झालावाड़
- 2012 → राष्ट्रीय उद्यान दर्जा
- 2013 → In Project tiger
- क्षेत्रफल ⇒ 297.62 km²

Note ⇒ वन विभाग के द्वारा वर्तमान में RJ का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान →

(1) मुकुन्दरा हिल्स (297.62 km²)
(2) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान (282.03 km²)

★ RJ के Conservation स्थल ★

- राज्य सरकार के द्वारा 1972 के वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के द्वारा इन स्थलो को निर्धारित किया जाता है।
- इसके अन्तर्गत वन रिपोर्ट 2021 के अनुसार 856 km² क्षेत्र आता है। जिसमें 15 निर्मित conservation स्थल है। व 16 वाँ घोषित conservation स्थल रणखार (जालोर) है।
- सबसे पहला - ~~शाहबाद (बारां)~~ बिसलपुर (टोंक) - 2008
- सबसे बड़ा - शाहबाद संरक्षित क्षेत्र (189.39 km²)
- सबसे छोटा - बीड मुहाना - II संरक्षित क्षेत्र (0.10 km²) (जयपुर)

"राजस्थान के प्रमुख संरक्षित क्षेत्र | Conservation Reserve"

Total = 36

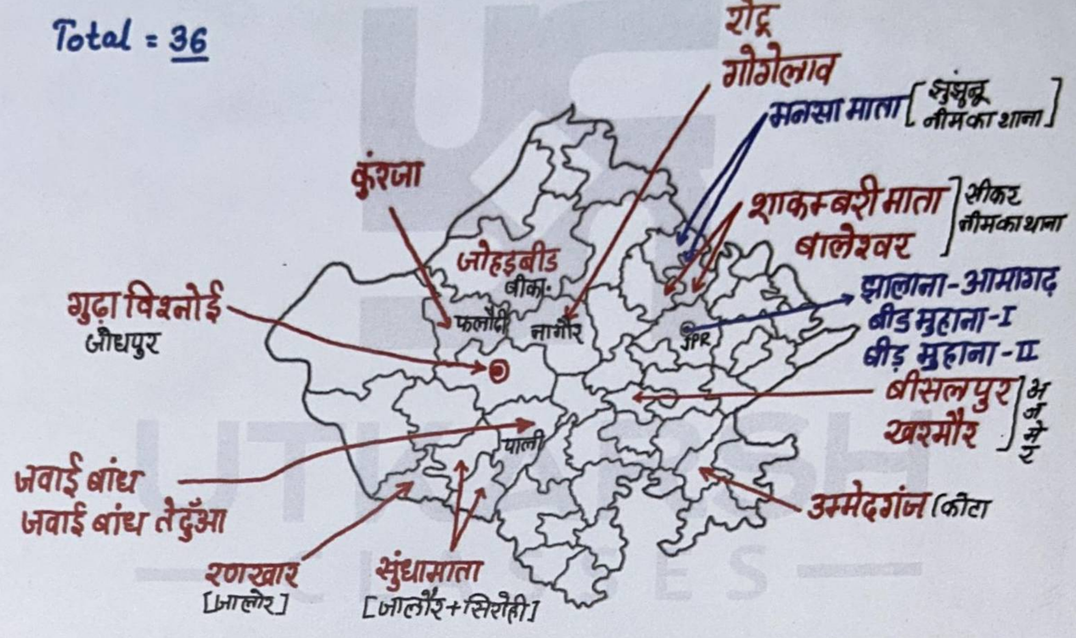

सबसे नवीनतम - अमृत महादेव तेंदुआ संरक्षित क्षेत्र
अमरख

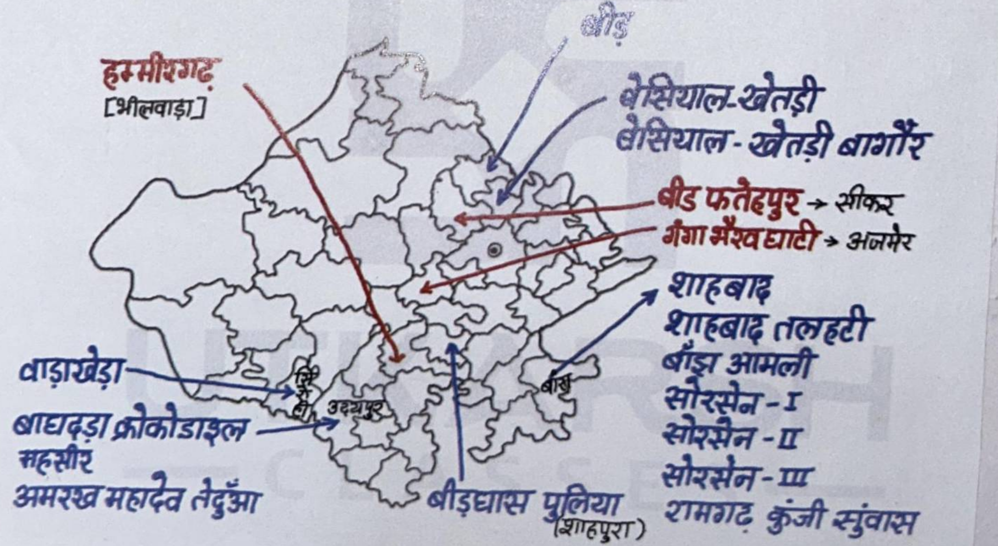

★ आखेट निषेध क्षेत्र / No Hunting Area ★

→ इनका निर्धारण 1972 वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के द्वारा किया जाता है।

→ इनकी कुल संख्या 33 है। (27000 km^2)

→ RJ के 17 जिलों में स्थित हैं।

सर्वाधिक → जोधपुर (7)

सबसे बड़ा → संवतसर कोतसर (चुरु)

सबसे छोटा → कनक सागर (बूँदी)

→ बांरा - शेरसेन व अजमेर - सोखलिया में → घोड़ावण संरक्षण स्थल बनाया गया है।

★ RJ के जिलों के शुंभकर ★

→ RJ के वन विभाग द्वारा 33 जिलों के वन्य जीव जन्तु व पक्षी को शुंभकर बनाया है। इनका उद्देश्य वन्य जीव जन्तु को संरक्षण देना है।

★
(1) श्री गंगानगर → चिकांरा
(2) हनुमानगढ़ → छोटा किलकिला / कींगफीशर पक्षी
(3) बीकानेर → भट्ट-भट्ट तीतर / रेत तीतर
(4) चुरू → कृष्ण मृग

★
(5) जैसलमेर → ~~गोडा~~ गोडावण पक्षी
(6) जोधपुर → कुरंजा पक्षी
(7) बाड़मेर → मरु लोमड़ी / लोकी
(8) जालौर → भालु / काला भालु
(9) सिरोही → जंगली मुर्गा
(10) पाली → तेंदुआ / Leepard

★
(11) उदयपुर → कब्र बिज्जु
(12) डुंगरपुर → जांगिल पक्षी
(13) बांसवाड़ा → जल पिपि
(14) प्रतापगढ़ → उडन गिलहरी
(15) चित्तौड़ → चौंसिगा
(16) राजसमंद → भेड़िया

★
(17) भीलवाड़ा → मोर
(18) अजमेर → खरमोर पक्षी
(19) टोंक → हंस
(20) नागौर → राजहंस / फ्लोमिंगो

★
(21) झालावाड़ → गागरोनी तोता / हिरामन तोता
(22) बांरा → मगरमच्छ
(23) कोटा → ऊदबिलाऊ
(24) बुँदि → सुर्खाव पक्षी

★
(25) SM → बाघ
(26) करौली → घड़ियाल
(27) धौलपुर → पंचीरा / पंछीड़ा / इंडियन स्कीमर
(28) भरतपुर → साइबेरियन सारस

★
(29) जयपुर → चीतल / मृग
(30) दौसा → खरगोश
(31) झुंझुनु → काला तीतर
(32) अलवर → सांभर
(33) सीकर → शाहिन पक्षी

Note ⇒ RJ के उदयपुर में "बर्ड सेन्चुअरी" विकसित की जा रही है।

धोटा किलकिला | फिंग फ्रिशर
चि का श
रेत का तीतर [बटबट]
काले हिरन
काला तीतर
शाहिन
गोड़ावण
कुंरजा
राजहंस
मृग
साइबेरियन सारस
इण्डियन स्कीमर | पचीरा
खरमौर
मरू लोमड़ी [लौंकी]
तेंदुआ
मोर
काले भालू
घड़ियाल
बाघ
मगरमच्छ
चौसिंगा
कब्र बिज्जू
जंगलीमुर्गा
हीरामन तोता
जांघिल
उड़न गिलहरी
जलपीपी